॥ त्रैलोक्यविजयविद्या ॥

.. trailokyavijayavidyA ..

sanskritdocuments.org

May 21, 2017

.. trailokyavijayavidyA ..

॥ त्रैलोक्यविजयविद्या ॥

Sanskrit Document Information

Text title : trailokyavijayavidyA

File name : trailokyavijayavidyA.itx

Category : kavacha

Location : doc_devii

Author : Traditional

Language : Sanskrit

Subject : philosophy/hinduism/religion

Transliterated by : Nat Natarajan nat.natarajan at gmail.com

Proofread by : Nat Natarajan nat.natarajan at gmail.com, NA

Latest update : March 20, 2016

Send corrections to : Sanskrit@cheerful.com

Site access : http://sanskritdocuments.org

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

Please help to maintain respect for volunteer spirit.

May 21, 2017

sanskritdocuments.org

॥ त्रैलोक्यविजयविद्या ॥

॥ अथ त्रैलोक्यविजयविद्या ॥

ईश्वर उवाच
त्रैलोक्यविजयां वक्ष्ये सर्वयन्त्रविमर्दिनीम् ॥ १॥

ॐ हूं क्षूं हूं ॐ नमो भगवति दंष्ट्रिणि भीमवक्त्रे महोग्ररूपे
हिलि हिलि रक्तनेत्रे किलि किलि महानिस्वने कुलु
ॐ निर्मांसे कट कट गोनसाभरणे चिलि चिलि शवमालाधारिणि द्रावय,
ॐ महारौद्रि सार्द्रचर्मकृताच्छदे विजृम्भ,
ॐ पूत्यासिलताधारिणि,
भृकुटीकृतापाङ्गे विषमनेत्रकृतानने वसामेदो विलिप्तगात्रे कह कह,
ॐ हस हस क्रुद्ध क्रुद्ध ॐ नीलजीमूतवर्णोऽभ्रमालाकृताभरणे विस्फुर,
ॐ घण्टारवावकीर्णदिहे, ॐ सिंसिस्थेऽरुणवर्णे,
ऊँ ह्रां ह्रीं ह्रूं रौद्र रूपे
हूँ ह्रीं क्लीं ॐ ह्रीं हूँ ओमाकर्षय ॐ धून धून,
ॐ हे हः खः वज्रिणि भिन्द,
ॐ महाकाये छिन्द ॐ करालिनि किटि किटि महाभूतमातः सर्वदुष्टनिवारिणि
जये, ॐ विजये ॐ त्रैलोक्य विजये हूं फट् स्वाहा ॥ २॥

नीलवर्णां प्रेतसंस्थां विंशहस्तां यजेज्जये ।
न्यासं कृत्वा तु पञ्चाङ्गं रक्तपुष्पाणि होमयेत् ।
सङ्ग्रामे सैन्यभङ्गः स्यात्त्रैलोक्यविजयापठात् ॥ ३॥

ॐ बहुरूपाय स्तम्भय स्तम्भय, ॐ मोहय, ॐ सर्वशत्रून्द्रावय,
ॐ ब्रह्माणमाकर्षय, ॐ विष्णुमाकर्षय, ॐ महेश्वरमाकर्षय,
ओमिन्द्रं टालय, ॐ पर्वतांश्चालय, ॐ सप्तसागराञ्शोषय,
ॐ छिन्दच्छिन्द बहुरूपाय नमः ॥ ४॥

भुजङ्गं नाममृण्मूर्तिसंस्थं विद्यादरिं ततः ॥ ५॥

इति त्रैलोक्यविजयविद्या सम्पूर्णा ॥

Proofread by Nat Natarajan, NA

.. trailokyavijayavidyA ..
was typeset using XƎLaTeX 0.99996
on May 21, 2017

Please send corrections to *sanskrit@cheerful.com*